स्वतंत्रता से पूर्व पंचायती राज संस्थाओं का विकास

डॉ. सोनू लाल मीना

पहले भाग में जब ब्रिटिश शासन भारत में स्थापित हुआ तो यहां पर स्थानीय शासन व्यवस्था स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य कर रही थी। ब्रिटिश शासन का उद्देश्य स्थानीय संस्थाओं का विकास करना नहीं था। उनका मुख्य उद्देश्य तो व्यापारिक गतिविधियों को भारत में बढाना था। भारत को एक अच्छे व्यापारिक केन्द्र के रूप में अंग्रेज देखते थे। उन्होंने इन स्थानीय संस्थाओं के विकास में इतना सा योगदान दिया कि कई कस्बों में अंग्रेजों द्वारा शासन में कुछ लोगों को नामित किया गया। 1857 के विद्रोह के बाद बंगाल में ऐसी परिस्थिति बनी कि लार्ड मेयो ने एक प्रस्ताव पारित किया। जिसके अनुसार स्थानीय स्वशासन की परम्पराओं को बनाए रखा जा सकें।

1880 के अकाल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार प्रभावित लोगों तक राहत पहुँचाने के लिए स्थानीय निकायों को शक्ति दी। 1882 में स्थानीय स्वशासन पर एक प्रस्ताव पारित किया गया। इस प्रस्ताव में व्यापक रूप से स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं के भू प्रशासनिक सिद्धान्त दिए।